

प्रश्न 35 का

व्यावसायिक

Dr. ANAND KISHORE
B.A. in Economics
VAF College, VAFS, India

Ques. व्यवसायिक बैंक साख्त धन को क्यों नहीं देता? और साख्त धन की क्या सीमा है?

Ans.

[Handwritten signature]

व्यवसायिक बैंक साख्त धन को नहीं देता क्योंकि यह बैंक के उद्देश्य के विपरीत है। व्यवसायिक बैंक द्वारा साख्त धन की सीमा पर ही व्यावसायिक व्यापारिक एवं औद्योगिक व्यवसाय की अभाविका रखी है।

Prudential साख्त का अंग्रेजी शब्द है।
Prudential शब्द से निकला है जिसका अर्थ होता है -

में विश्वास करता है। इस प्रकार साख्त शब्द का मतलब साख्त अथवा गरीमा में है। अतः सामान्य जीवन में जिस व्यक्ति पर जितना अधिक विश्वास या गरीमा किया जाता है उसकी साख्त उतनी ही अधिक होती है। पर, अर्थशास्त्र में साख्त का अर्थ ऋण लौटाने की क्षमता या ऋणान करने की क्षमता में विश्वास से होता है।

प्रॉफ. केन के अनुसार, मांग फिर उनके पर किसी निम्न अवस्था में प्रौद्योगिक दस्तावेज़ वस्तुओं के बदले में ऋणान लेने के अधिकार अथवा ऋणान देने की जिम्मेदारी को साख्त कहते हैं। किंग जेम्स ने भी कहा है कि - साख्त है हाथ मलब किसी व्यक्ति की उस क्षमता से है जिससे वह किसी दूसरे व्यक्ति को भविष्य में ऋणान की प्रतिज्ञा पर अपनी आर्थिक वस्तुएँ समर्पण करने के लिए प्रेरित करती है। इस प्रकार साख्त शब्द का अर्थ ऋणी का उस अर्थ अर्थ में है कि ऋण में कदा कभी सफल है कि नहीं।

साख्त एक प्रकार का विनिमय कार्य है जिसके अन्तर्गत कोई ऋणदाता किसी ऋणी को वर्तमान समय में मुद्रा वस्तु या अन्य पदार्थ इस विश्वास पर प्रदान करता है कि भविष्य में एक निश्चित अवधि के बाद वह इसे लौटा देगा। प्रॉफ. थॉमस ने भी कहा है कि - साख्त शब्द में किसी व्यक्ति की उस साधन क्षमता एवं देनदारी के विश्वास का बोध होता है, जिसके जगत्वाय उस समय पर विश्वास कर उसे मुद्रा वस्तु, सेवाएँ या अन्य कोई

वस्तुसम्य पदार्थ सौंपा जाता है। उस तरह साख को परिभाषित करते हुए पाठक छोटे मॉडेल में दीक दी कहा है - "It is an exchange which is complete after the expiry of a certain period of time after payment."

1. साख के आवाह पर लेन-देन की प्रथा प्राचीन काल से है। मुद्रा के आविष्कार के साथ-साथ साख प्रथा का तेजी से विकास हुआ है। आज हम औद्योगिक एवं उन्नत उद्योगिक क्षेत्रों में बिना साख के काम नहीं चल सकता।

जमाव (सापिक) बैंकों का प्रमुख काम जनता से मुद्रा के रूप में जमा प्राप्त करना है। लेकिन बैंक केवल मुद्रा के रूप में जमा प्राप्त नहीं करते बल्कि बैंक जमा भू साख या मुद्रा का भी स्थान करते हैं। वास्तव में आज जमा के हम इकोनमी आताहरी की दृष्टीज पर खड़े हैं। साख स्थान दुर्लभ सापिक बैंकों का बड़ा ही महत्वपूर्ण कार्य है। जमा दो प्रविष्ट अवस्थाएँ - *deposits* में दीक दी कहा है कि बैंक केवल मुद्रा जमा करने वाली संस्था ही नहीं है बल्कि एक महत्वपूर्ण उद्योग में मुद्रा का निर्माण करने वाली संस्था भी है। उन्ही के अर्थों में,

merely
"Banks are not ~~merely~~ merely purveyors of money, but also in an important sense, manufacturers of money."

2. बैंक द्वारा निर्मित मुद्रा को बैंक मुद्रा कहते हैं। वास्तव में हर साल का स्थान नए मुद्रा का निर्माण है क्योंकि साख या बैंक मुद्रा का वही काम होता है, जो काम मुद्रा करता है।

संक्षेप में निम्नलिखित तरीके से बैंक साख का निर्माण करते हैं -

- (i) बैंक नोटों का निर्माण करके (By issuing bank notes).
(ii) बैंक कागजी नोटों का निर्माण करके साख का निर्माण करते हैं।

परके लोगों को जमा करने का अधिकार व्यवसायिक बैंकों को भी था किन्तु अब यह अधिकार सिर्फ केन्द्रीय बैंकों को ही जमा है। इस प्रकार यह केडी बैंक द्वारा जारी किया जा रहा है एक प्रकार का साव है। अब व्यवसायिक बैंक इस सिद्धि को भी अपना लेंगे।

(2) नगर मुद्रा जमा के रूप में स्वीकार कर :-

नकद
10/11

जैसे नगर मुद्रा जमा के रूप में स्वीकार कर साव का स्थान करते हैं। ग्रहकों से प्राप्त नगर मुद्रा बैंक की सम्पत्ति होती है पर उससे उसे ग्रहकों के खाते में जमा कर देता है तो यह उसका दायित्व ही जमा है। इसी के आधार पर बैंक प्राण देकर अपना प्रतिभूति या अन्य प्रकार की सम्पत्तियों को जमा कर साव का निर्माण करते हैं।

(iii) ग्रहकों को प्राण देकर :- बैंक अपने ग्रहकों को प्राण देकर साव का स्थान करते हैं। वर्तमान समय में साव स्थान का सबसे महत्वपूर्ण और प्रभावशाली विधि है। बैंक अपना बैंक जमा का स्थान होता है और इस नई साव अवस्था बैंक जमा के स्थान है पुनः बैंक अधिक कर्ज देकर साव का निर्माण करता है। इस प्रकार यह गति चलता रहता है जो बैंक जितनी अधिक मात्रा में प्राण देता है, वह उतनी ही अधिक मात्रा में साव का स्थान करता है।

उदाहरण के लिए प्रत्येक बैंक के पास नकद के रूप में जो जमा प्राप्त होती है उसका कुछ प्रतिशत अपने पास जमा रखकर शेष रकम वह ग्रहकों को जमा के रूप में दे देता है। प्रत्येक बैंक अपने जमा की कितनी मात्रा जमा के रूप में रखेगा यह केन्द्रीय बैंक निर्धारित कर देता है। बैंक को बैंक के सम्पूर्ण राशि का एक ही बार में बैंक में निकाल लेने की अनुमति दी जाती है। इससे कुछ बातें स्पष्ट हो जाती हैं।

(2) जमा के आधार पर बैंक कर्ज देता है। जमा की उत्पत्ति होती है।

(iii) कर्ज के रूप में दी गई रकम पुनः जमा के रूप में उठा जाती है। इस प्रकार कर्ज से जमा की उत्पत्ति होती है। 100% credit expansion।

केना में ही है। ही का है कि कर्ज जमा की संगत है और जमा कर्ज की संगत है। "Loans are the children of deposits and deposits are the children of loans" यही बैंक के पास जमा न होता तब कर्ज नहीं है। यही बैंक जमा से कर्ज का आधार है। अर्थात् कर्ज की उत्पत्ति जमा ही होती है।

(क) जब कोई व्यापारी कर्ज के लिए आवेदन देता है तो बैंक उसे एक निश्चित रकम की स्वीकृति देता है। एक Loan account खोलकर कर्ज की पूरी रकम उसमें deposit कर देता है। इस तरह व्यापारी बैंक का देनदार हो जाता है और बैंक व्यापारी का लेंनदार हो जाता है। व्यापारी को एक ही बार पूरी रकम कोशाने की अनुमति नहीं मिलती। कर्ज की रकम को व्यापारी के नाम खात खोलकर उसमें deposit कर दिया जाता है। इस प्रक्रिया में व्यापारी बैंक का सम्बन्ध हो जाता है। अब व्यापारी बैंक का लेंनदार हो जाता है।

दायित्व

सम्पत्ति

| जमा 10,000 Rs.

कर्ज तथा अग्रिम 5000 Rs.

| जमा 15,000 Rs.

कर्ज तथा अग्रिम 10,000 Rs.

उपर के example में स्पष्ट है कि 5000 रु कर्ज देने के बाद बैंक के कर्ज एवं अग्रिम की रकम अपने रूप में बढ़ा की गयी है कि बैंक ने उस कर्जदार के खाते में deposit कर दिया है। यह रकम बैंक के लिए सम्पत्ति है, लेकिन कर्जदार के लिए दायित्व है। अब पुनः वह रकम कर्जदार के खाते में जमा की गई है, जिससे जमा की राशि बढ़ गई। यह 5000 रु के अतिरिक्त जमा की रकम कर्जदार की सम्पत्ति है लेकिन बैंक का दायित्व है। यहाँ यह बात स्पष्ट होती है कि यदि बैंक व्यापारी को कर्ज नहीं देता, उसकी जमा भी नहीं बढ़ती। इस तरह जमा की उत्पत्ति कर्ज ही होती है और प्रत्येक प्रकार जमा का सृजन ही अर्थात् बैंक द्वारा देकर साव का सृजन करते हैं। उपरोक्त पक्षों में साव का सृजन करके बैंक साव का बड़ा होना तथा कर्ज ही यह काम करवाती सम्पत्ति